November 2016

10

315-051

Thursday

(1)

23/7/20

क्रमशः:

B.A. 1 B.S.G.
Hindi रचना
रसखान के
काव्य की विशेषता

डॉ० अलका कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एस० कॉलेज
जहानाबाद

रसखान की भक्ति अनन्य भक्ति है। उनका राग कृष्ण में विन्यस्त है? रसखान ने आत्मसमर्पण किया है। कृष्ण के लिए वे दिल्ली की बादशाहत छोड़कर फकीर हुए हैं। यह भक्त फकीर कृष्ण की लकुटी और कमरिया पर तीनों लोकों का राज निछावर करने के लिए तैयार है —

या लकुटी अरु कामरिया पर
राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।
आठहुँ सिद्धि नवौं निधि को
सुख नंद की गाय चराई बिसारौं।।

रसखान में काव्य तन्मयता भक्ति है। इनकी सम्पूर्ण आसक्ति ही कृष्ण की ओर धावित है। मन वाणी और कर्म तीनों कृष्ण में मिल जाने को व्याकुल है। इनकी तन्मयतापूर्ण भक्ति पर रीझकर ही भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा है —

'इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिन्दू वारियै'

रसखान ने प्रेम की दुहाई दी है। प्रेम ही उनके जीवन की पूँजी है। प्रेम को कवि ने महत्व दे भगवान के समकक्ष बतलाया —

क्रमशः —

(2)

२७/१/२० क्रमशः — November 2016

B.A + B.Sc. [illegible] 321-065 **16**

Part I, [illegible] Wednesday

रसखान

प्रेम हरि को रूप है
त्यों हरि प्रेम स्वरूप।
एक होइ द्वै यों लसैं
ज्यों सूरज अरु धूप।

आगे भी उन्होंने प्रेम को हरि से भी ऊँचा स्थान दिया। क्योंकि जिनको प्रेम का स्वाद मिल जाता है उनके मन में फिर हरि को प्राप्त करने की लालसा नहीं रह जाती —

जेहि पाए बैकुंठ अरु
हरि हूँ की नहिं चाहि।
सोइ अलौकिक सुद्ध सुभ
रसखान सुप्रेम कहाहि।

कृष्ण के प्रति रसखान की भक्ति सख्य भाव की है। दास्य भाव की भक्ति में आराध्य एवं आराधक के बीच व्यवधान एक मर्यादा की दीवार खड़ी रहती है, पर रसखान दूरी नहीं बनाये रखना चाहते। दूरी मिटाकर प्रिय के साथ एकाकार हो जाने की कामना लेकर ही वे भक्ति के प्रांगण में आये हैं। सख्यभाव रखने के कारण ही वे ढिठाई से कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते हैं। उनका प्रसिद्ध पद है —

जोगी जती तपसी अरु सिद्ध
निरंतर जाहि समाधि लगावैं।
ताहि अहीर की छोहरियाँ
छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं।

रसखान का प्रेम रूपासक्ति है। वे कृष्ण की छवि पर आसक्त हैं। उन्होंने कृष्ण का रूप वर्णन बड़े ही मनमोहक ढंग से किया है।

क्रमशः —